मेरी धरती मेरे लोग: खिराज़े तहसीन

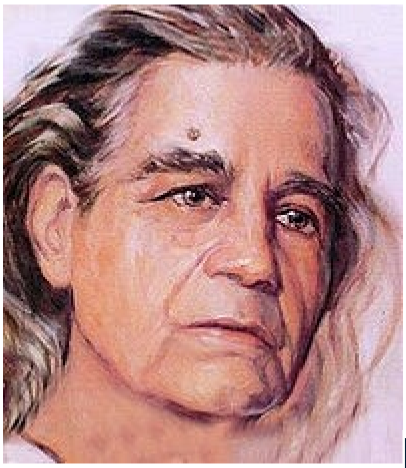

अली सरदार जाफ़री (1913-2000)
प्रसिद्ध भारतीय उर्दू कवि,लेखक आलोचक और गीतकार
BOMBAY, 29th August 1976
तुमने मुझे पुकारा
तुम न भी पुकारते तो मैं आजाता
तुम्हारी आवाज़ को ढूंढ़ता हुआ
अपनी कानों, अपनी आँखों, अपने लम्स से ढूंढ़ता हुआ अपने पूरे होश व हवास के साथ
देश की सभी सीमाओं में तुमको ढूंढ़ता हुआ
तो मैं आगया हूँ
इसलिये नहीं के फक्त मैं ही जानता हूँ तुम नहीं जानते बल्के इसलिये के हम एक सीमत में चले
एक दूसरे के हाथ में हाथ डाले हुए
ये नहीं के हम एक ही ज़बान बोले
लेकिन ये के हमारे अलफ़ाज़ खाली अलफ़ाज़
न हों
बल्के रौशनी के शोले हों

जो अवाम की राहों में चिरागां करदें

और अपने अन्दर भी हम उनको महसूस करें इसीलिये तो मुझे तुम्हारी तलाश थी ।

एक बुलन्द क़ामत शायर की बुलन्द कामत तखलिख मेरे सामने हैं । ये बात काबिले रष्क है के तेलुगु जबां में ऐसी दौलत है और इस हकिक़त में मेरे लिये एक हैरतनाक मसर्रत है के तेलुगु जबां का यह हसास और जमाल परस्त शायर जो इनकलाबी ज़लाल की बुलन्दी तक जाता है और जिसका दिल इन्सानी मोहब्बत के नूर से जगमगा रहा है मेरा हम असर है। शायद यह कहना बेहतर हो के मैं इसका हमअसर हूँ । मैंने इसके नग़मे इसकी ज़बान से सुने हैं और उनकी लताफ़त और सलाबत को महसूस किया है ।

किसी मासूम बच्चे को देखना, किसी खूबसूरत औरत से मिलना, किसी अच्छी नज्म को पढना एक तरह का कायनाती तजरूबा है। इस वक्त इन्सानी फ़िक्र ओ एहसास और उनके सारे तलाज में, सारे सिलसिले हाय- ख़याल, अपनी शदीद मानवीयत के साथ रूहे इन्सान में घुलमिल जाते हैं और इस लज्जत ओ अनबिसात कि तख़लिख करते हैं जिसका तजजिया मुमकिन नहीं ।

शेषेन्द्र शर्मा की तेलुगु नज्म का उर्दू तर्जुमा "मेरी धरती मेरे लोग" पढ़कर मैं ईसी ही लज्जत ओ अनबिसात की लहरों में डूब गया और इसके लिये मैं अस्तर हसन का शुक्रगुजार हूँ जिन्होंने तेलुगु जबान की इस दौलत को उर्दू पढ़ने वालों तक इस खूबसूरती के साथ पहुँचाया है ।

नज्म के इप्तदाई मिसरे एक बड़ी तख़लीख की बशारत लेकर आते हैं ।

सहर के उफख़ से एक हाथ उठता है

वक्त मज़दूर का हाथ

किस्ते हयात के खून पसीने में डूबा हुआ और सिन्दूर छिड़कता है

दूरदूर की परछाइयों पर

मेरे लिये ये बताना मुश्किल है के तर्जुमें में असल नज्म का कितना हुस्न कितना जादू मुंतकिल होने से रह गया है लेकिन जितना हुस्न और जादू बाक़ि है (वो बहुत है) वो इस वात की शहादत देता है के ये नज्म रंग ओ आंग का एक खूबसूरत आबशार है । इसमें गहरा फलसफा आसान जबान में अदा हुआ है इसका खालेख शायर इस नज्म में फूल की तरह नर्म और आतिशफिशां की तरह गर्म है । इस नज्म को

पढ़ते पढ़ते हम कभी उपनिषद और वेदान्त के नग़मारेज़ जंगलों में पहुँच जाते हैं । और कभो अहदे हाज़िर की करख्त जिन्दगी की चट्टानों से हसीनबुत तराशने के ख्वाब देखने लगते हैं । नादिर तराबिहों अछूते इस्तिआरों और बेमिसाल लब्ज़ी पैकरों का एक जुलूस जिसको साथ लिये हुए शायर शहर से गांव से ज़मीन से आसमान से गुज़र रहा है ।

देस के जंगलों से अपनी उरीयानी को ढांपे हुये

नदियों को पगड़ी की मानिन्द सर पर लपेटे हुए

कभी वो जुएनगमा खां है और कभी संलेतुन्दरव । उसकी ये सारी शायराना फौज़ जिसमें मजदूर किसान अशिक सभी शमिल है । असरे हाज़िर की बेइन्साफियों और

इन्सान की तजलिल के खिलाफ एलने-जंग करने के लिये वजूद के मैदान में उतरी है।

ये नज्म गिनाई कैफ़ियात से मालामाल है लेकिन इसी के साथ इसमें एक रजमियां अन्दाज़ भी है । मैं इसको मुकम्मल तौर से रजमियां नहीं कह सकता। ये अन्दाज़- फिरदौसी के शाहनामें और इक़बाल के जावेदना में से मुक्तलिफ है । इसे अगर रजमिया का जदीद अन्दाज़ कहा जाय तो बेहतर है। ओर ए विटमन की शायरी से ज्यादा क़रीब है । ये हिन्दुस्तान का रजमियां है जो अपनी शायराना बुलन्दियों को छूते छूते अहदे हाजिर की सारी दुनियां का रजमियां बन जाता है।

"मुझसे मत पूछो के मैं इतना बेकरार क्यों हूँ

समन्दर से पूछो के वो क्यूं बेकरार रहता है

मुझसे मत पूछो के मैं इतना गजबनाक क्यूँ हूँ से इसका जबाब मांगो

तूफान

जान लो के वक्त मेरा कागज़ है।

जिस पर मैं इब्ने आदम के लिये अपने ख्वाबों का

मनशूर लिखता हूँ

और अपने खून से इस पर दस्तखत करता हूँ । इन्सान के अन्दर की देव पैकर शक्ति को निकालता हूँ

और उसे तराश कर धरती पर खड़ा कर देता हूँ

मैं अपने चौमुखे गीतों से

अपने देस को ऐसी आगही अता करूंगा के शताब्दियां वही जबां बोलने लगेंगी जो मैंने जंगलों के बतन में सीखी है
आने वाली नस्लें मेरे लब्ज़ों की वारिस होंगी और मेरे गीत सज़ावार होंगे सिर्फ खोमों और देसों को,
यहाँ शायर की तकदीर, हिन्दुस्तान की तक़दीर और सारे आलमें इन्सानियत की
अलबेले शायर के पास एक कारगर
वह इसकी माशूक़ा का हुस्न है ।
तक़दीर एक है । इस
हरबा और है और ये हुस्न उसके देस ही
का एक निखरा हुआ रूप है । जो हर लम्हां उसके साथ है: 'सौसन के फूल अपने होंठ खोल रहे हैं
तुम्हारा पयाम पहुँचाने के लिये
और पत्तियाँ सरगोशी कर रहीं हैं।
मेरे लिये तुम्हारे इश्तियाक़ के बारे में बेखाब रातें गुजारता हूँ मैं
तारे भरे आसमानों को तकते हुए
तुम्हारे और अपने लोगों में बटें हुए दिल के साथ मेरी आँखें दो शम्मों की तरह अपने अन्दर बसाये हुए हैं
तुम्हें और अपने देस कों"
और जब शायर के कान आहों से जख्मी हो जाते हैं और आखें ख़ौफ़नाक नज़ार से लहलहान हो जाती हैं तो वह उस माशूका के हुस्न में पनाह ढूंढ लेता है। जैसे बीज मौत से बचने के लिये धरती की गोद में मुंह छुपा लेता है:
"जानेमन
मेरी आँखों और मेरे कानों को अपनी नज़ाकतों से लपेट लो
इस धरती पर जहाँ फूल खिलते हैं। लहू की बून्दें टपक रही है इस धरती पर जहाँ परिन्द चहचहाते हैं।
हवाएँ आहों से बौझल है............ "

इसकी माशूखा के पाकिज़ा हुस्न का ये लम्स शायर को फिर ज़िन्दा कर देता है । उस हुस्न में धरती की ताकत है और निसवानियत की शक्ति है जो शव को शिव बनाकर एक लाश को एक देवता में तब्दिल कर सकती है ।
"बरसो से पहले गीत मुझे छोड़कर चला गया था ।
आज उसने फिर मेरे होंठों की देहलीज़ पर क़दम रखा है । वादियां हयारे गीत बुन रहीं हैं
चांद मेरी खिड़की में दर आया है।
और उसने फिर मेरे अन्दर की आग सुलगा दी है
हल मेरे हाथ में एक अज़दहा बन गया है
खेतों में मेरा काम जंज़ीर की तरह मेरे पांव से लिपट गया है तुम्हारी बातें - जैसे शहद की मक्खियों का छत्ता कभी मेरा पिछा नहीं छोड़ती
मेरा दिल एक नदी बन गया है सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ बहने के लिये मेरा दिमाग़ एक हुजरा बन गया है
जिसके दरवाज़े सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ खुलते हैं
खेतों से ये फूल मैं सिर्फ़ तुम्हारे लिये लाया हूँ
ये फूल एक पंछी है जो तुम्हारे जुड़े में नशेमन बनाना चाहता है
वो गीत जो पिछली रात हमने साथ साथ गुनगनाये थे
अभी तक झाड़ियों में अटके हुये हैं
और वह फूल जो धरती पर उतर आये थे
अपने दरख्तों की तरफ़ लौटना भूल गये हैं.

"

यहाँ ऐसा महसूस होता है कि ये नज्म शायर के दैस और दुनियाँ में एक नये जश्ने बहार की तमन्नाई है। उसकी माशूक़ा की बारगाहे हुस्न में एक खिराजे अकीदत, एक खिराजे मोहब्बत है । इस नज्म में जो मरकज़ी फलसफियाना तसऊर है उसमें अहदेहाज़िर के इन्कलाबी शउर की आमिजेज़रूर है लेकिन इसका रिश्ता है इन्सान और कायनात कि वहदत के उस तसव्वुर से मिलता है जिसकी

इप्तदा ॠग्वेद से होती है और जिसका सिलसिला उपनिषदों में जारी रहता है। इस तसव्वुर ने हिन्दुस्तानी ज़हन की सदियों आबयारी की है । यह टैगोर की शायरी में खूनेबहार की तरह दौड़ता मिलेगा REDMI 12 5G रीय ब्राह्मण में ये उलूही नगमा इस तरह दर्ज है:

"मैं (अन्नम्ः गिजा) जातेमुलख़ की पहली तखलीख हैं
देवताओं के वजूद में आने से पहले मैं मौजूद था
मैं ह्याते अबदी का मरकज़ हूं, उसकी नाफ हूं
जो मुझे दूसरे को अता करता है वह इस तरह
मुझे अपने लिये रख लेता है
मैं अन्नम् हूं, मैं गिजा हूं
"गिज़ा जिन्दगी की सांसा है।
बाहर निकलने वाली और अन्दर जाने वाली सांस गिजा को मौत कहते हैं, इसी गिजा को जिन्दगी कहते हैं
गिजा को बूढ़ापा और इनहैतात कहते हैं।
ओर गिजा को तखलिखे नो भी कहते हैं"
"मैं अन्नम् - बादल हूं गरजता बरसता हुआ
नूफ़स मुझसे गिजा हासिल करते हैं और मैं हर
चीज़ से गिजा हासिल करता हूं
मैं कयनात का सत हूं- लाफ़ानी और मुतलख
मेरी शक्ति से आसमानों के तमाम सूरज रोशन है"
यह अबदि हकिक़त एक सतह पर मादा और शक्ति है जो मुख्तलिफ शक्लें इख्तियार करता है। एक चीज़ से दूसरी चीज़ पैदा होती है ये तबदिली होती रहती है लेकिन फ़ना नहीं होती, ख़तम नहीं होती दूसरी सतह पर यह एक इखलाखी क़ानन का एलान है जो दूसरे को गिजा देता है वो अपने लिये गिजा महफूज करता है। गिजा सारी इन्सानियत कि मिल्कियत है। ग़िज़ा सारी इन्सानियत में तक़सीम होनी चाहिये ।

इस पहल की तशहरी करते हुए जर्मन मुश्तशरीख हाइन रीख जिम्मर ने इस उलुही नगमें को एक तरह का कायनाती (कास्मिक) कम्युनिस्ट मैनीफैस्टो कहा है।
शेषेन्द्र शर्मा की इस नज्म "मेरी धरती: मेरे लोग " में तैत्तरीय ब्राह्मण का उलुही नग़मा बार बार जागता है । लेकिन असरेहाज़िर की इन्कलाबी मानवीयत लिए हुए:
जनम लिया है मैंने अनाज़ से
जीता हूँ मैं अनाज के लिये
मैं जब बीज में था मैंने एक राग सुना
और मेरे अन्दर ये ख़ाहिश बाग उठी के बाहर निकलूं
सूरज और आकाश को देख
और दश्ते सूकूत में हैरत का अमृत पीउं
मैं दरख्त बना
उसकी डलियों में दरख्त का ख्वाब बना
और फिर अपने आप में राग, रस,
और महक समौंकर फूल बना.
आहा, मैं खूबसूरती में नहा रहा हूँ, सरशार हूं देखें के इन हलके गहरे तूफानों से
जो, खूबसूरती मेरे ऊपर उंडेलती है हाय! क्या दरख्त है सरापा विख़ार-- एक तमकीने मुश्तखिल
इसका भेद कहां है
डाली से लटकता फूल, सोच रहा है
डाली से गिरने से पहले
वह जान जाता है के इस दरख्त का बीज खुद
इसके अन्दर है
और उसकी “मैं” और दरख्त की "मैं" दोनों एक हैं ।
नज्म के आख़री बन्द में शायर अपनी माशूका से फिर मुख़ातिब हो जाता है "जो बीज है, धरती है, और कायनात है और मुश्तकबिले

इन्सान के खूबसूरत तस्सऊर को उसके हुस्न के पैमाने में ढाल देता है ।
"तुम्हारे होंठों से, तुम्हारे बतन से, मेंरे जिस्म से ख़ाबों की एक नई नस्ल जन्म लेगी
जिसके दस्त ओ बाजू अमल की हरारत से मामूर होंगे
जो इन्सानी बस्तियों से जमूद को निकाल बाहर करेंगे
और हमारे प्रेम के फलों की तरह
खुशहाली के गुलशन वो गुलजार खिलायेंगे
हमारी ज़िस्मों की मिट्टी का अनाज
मुस्तक़बिल मे हमारी उम्मीदों का बीज बन जायेगा मेरा देस, मेरे लोग, मेरी धरती सब तम्हारे वजूद में
और तुम्हारे लिये मेरी वालेहाना मोहब्बत में घुलमिल गये हैं तुम्हारी आँखों में मुझे उफ़क के जलवे नजर आ रहे हैं
और ये नये उफक़
इस जालिम सदी के चेलेंजों का मुक़ाबिला करने के लिये
मेरे क़दमों को इशारा दे रहे हैं
मैं जानता हूं के मैं उन्हें फ़तह कर लूंगा और मेरे बाद मेरे अलफ़ाज़ उन्हें जीत लेंगे मोहब्बत की बेपनाह गहराइयों में डूबकर मुझे इन्सान बनने का फ़कर व इम्तीयाज हासिल हुआ है" इस खूबसूरत और शानदार नज्म के लिये जिसकी तख़लीख शायर ने सिर्फ नौ दिन में की है । शेषेन्द्र शर्मा हज़ारों मुबारकबाद के मुस्तहक़ हैं! आखिर में अख्तर हसन का शुक्रिया अदा करना चाहता हूं कि उन्होंने मुझे और उर्दू के हजारों पढ़ने वालों को तेलगु शायरी के इस हुस्न से रौशनास कराया । हिन्दुस्तान की ज़बानों के दरम्यान बराहे रासित तर्जुमें के • जरिये से ये लेन देन अगर और बढ़े तो हमारे अदब व शेर को बहुत फ़ायदा पहुंचेगा ।